

Learning (सिखना या अधिगम)

सीखना ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपने जीवन में सीखने की प्रक्रिया का निर्माण कर सकते हैं। सीखने का अर्थ है, किसी चीज़ को समझना या उसे अपने ज्ञान में जोड़ना। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

सीखने के अर्थ में हमें यह समझना है कि सीखने की प्रक्रिया हमारे जीवन में कैसे काम करती है। यह प्रक्रिया हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

(17)
 यदि व्यवहार में एक अच्छा एवं अनुकूल परिवर्तन
 के कारण है। यदि व्यक्ति नहीं है तो उसे
 प्रेरित करने के लिए व्यक्ति को जो
 शक्ति देना है। व्यवहार में ऐसे परिवर्तन बहुत
 हैं। व्यवहार में ऐसे परिवर्तन के कारण हैं। जैसे
 से तात्पर्य व्यवहार में इन दोनों तरह के परि-
 वर्तन से होता है। Learning is the
 change in behaviour ofr better or
 worse)

(11) व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास या अनुभूति
 के फलस्वरूप होता है। (The change in
 behaviour occurs as a junction of
 practice or experience) → जिसमें जो
 व्यक्ति में व्यवहार में जो परिवर्तन होता है वह
 अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है।
 यहाँ अभ्यास (Practice) से तात्पर्य किसी प्रकार
 के प्रशिक्षण से होता है जिसमें व्यक्ति को
 के लिए-2 प्रकार के हुए तथा अपनी गतिविधियों को
 सुधारते हुए शीघ्रता है। अनुभूति (experience)
 से तात्पर्य व्यक्ति को आकस्मिक अनुभूतियों से
 होता है जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन
 लाता है। इसके उदाहरण द्वारा इस प्रकार स्पष्ट
 कर सकते हैं, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति
 हाइप क्लॉन्ग शीघ्र रहा है स्वभावतः वह हाइप
 क्लॉन्ग को प्रशिक्षण को वह एक प्रशिक्षण के अ-
 आघात पर शीघ्र रहा है - क्योंकि वह एक-2
 अपनी हाइप करता है और प्रत्येक बार में
 हुई अपनी गतिविधियों को सुधारता भी जाता है।
 अंत में वह बिना प्रशिक्षण के गतिविधियों के
 में हाइप क्लॉन्ग शीघ्र होता है। यहाँ व्यक्ति को
 परिवर्तन एक प्रशिक्षण के फलस्वरूप हुआ प्रत्येक
 प्रशिक्षण को शीघ्रता के लिए व्यक्ति को अभ्यास

नी ही प्रवृत्त नहीं बदलती क्योंकि वह
जान एक कार के अनुभव से ही सीख लेता है
जो यदि किसी व्यक्ति का हाथ एक जगह रहै
पर अचानक फट जाता है तो वह मात्र एक
ही कार के अनुभव में सीख लेता है कि
जो जगह रहै पर हाथ नहीं रखना चाहिए।

(iii) व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है
(there is relatively permanent change
in behaviour) →

उपरोक्त परिभाषाओं में इस
कारण पर अधिक बल दिया गया है कि सीखने में
व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है। अपेक्षाकृत स्थायी
परिवर्तन ^{अधिक} वेले परिवर्तन को कहते हैं जो एक निश्चित
समय तक एक तरह से स्थायी होता है। पर कुछ
दिन का भी हो सकता है तथा कुछ महीनों का भी
हो सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि कोई छात्र टाइप
मशीन सीखता है तो उसके व्यवहार में हुआ उस तरह
का परिवर्तन कुछ समयों तक स्थायी होता है। अर्थात्
न जाने से संभवतः वह तीन-चार महीने या पाँच
महीने में ^{अधिक} श्रद्धा ^{अधिक} तब गह कर सकते हैं कि
छात्र के व्यवहार में हुआ परिवर्तन तीन या पाँच
महीने के लिए स्थायी था। अगर व्यवहार में हुआ
परिवर्तन शारीरिक होता है अर्थात् कुछ शिष्टता के लिए
ही होता है, जैसा कि प्रेरणात्मक अवस्था ^{अधिक} श्रद्धा,
ज्वाला, काम, ज्ञान आदि में होता है तो उसे हम
सीखना नहीं कह सकते हैं। हाउस्टन (Houston,
1976) ने इतना ही कहा है कि व्यवहार में प्रेरणात्मक
परिवर्तन में उदात्त-बदलाव होने से उत्पन्न ^{अधिक} परिवर्तन
सीखने का प्रयोग में नहीं आते हैं।

अब उपर किमी गरी विश्लेषण के
आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि
किसी व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना कहना
के लिए निम्नलिखित शर्तों का होना जरूरी है।

Date _____
(7/20)

(1) लवण में परिवर्तन अणुसंघ या अणुसूत्र के परिवर्तनरूप ही हुआ है। अणुसंघ, परिवर्तन, द्रव्य स्थिति, अणुसंघातक, अणुसंघ में उत्तर-सूत्र आदि के कारण द्रव परिवर्तन को सीलना नहीं कहा जाता है।

(ii) लवण में अणुसंघ या अणुसूत्र से उत्पन्न परिवर्तन को शारीक, न ही अणुसंघातक लवण हीना चाहिए।

Strange and Chapman, 1973) के अनुसार -

" सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।"

मार्शल, किंग, विटल तथा स्कॉफ़ल (Marshall, King Weiss and Schaffer, 1986) के अनुसार,

" अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।"

हर्गनहाम (Hergenhahn 1988) के प्रो किम्बल (Kimble) द्वारा की गयी परिभाषा में संशोधन करने की रीतने की परिभाषा दिया है जो इस प्रकार है -

" सीखना व्यवहार या व्यवहारत्मक अन्तः शक्ति में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है जो अनुभूति के कारण होता है और जिसे अस्थायी शारीरिक अवस्थाओं जैसे, तेरे अकल्लाएँ जो बीमारी, थकान या औषधि लेने आदि से उत्पन्न होते हैं, के रूप में आरोपित नहीं किया जा सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं उनके मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गयी गयी परिभाषाओं का यदि संयुक्त विश्लेषण (Joint analysis) किया जाए तो सीखने का स्वरूप बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। इस तरह के विश्लेषण करने पर हम निम्नान्वित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

- ① सीखने का अर्थ में परिवर्तन को कहा जाता है (Learning is the change in behavior) → प्रत्येक सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होता है। अतः परिवर्तन ऐसी है जिसमें लासि के व्यवहार में परिवर्तन नहीं होता है तो उसे हम सीखना नहीं कहेंगे। व्यवहार में परिवर्तन एक अच्छा एवं अनुभूति परिवर्तन भी हो सकता है। सांस्कृतिक चमत्कार सीखना, स्वीट्टर पुराना सीखना